भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित

नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

तथा भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रांत

द्वारा

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार

विषय पर

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125वीं एवं

राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

पौष शुक्ल अष्टमी एवं नवमी, वि.सं. 2076

(03 एवं 04 जनवरी, 2020 ई.)

सेवा में,

_____

_____

_____

प्रेषक :

डॉ. प्रदीप कुमार राव

प्राचार्य/अध्यक्ष, आयोजन समिति

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज

जंगल धूसड़, गोरखपुर-273 014

www.mpm.edu.in • Email : mpmpg5@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

संचालन समिति

अध्यक्ष :

प्रोफेसर हिमांशु चतुर्वेदी

अध्यक्ष, भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त

उपाध्यक्ष :

डॉ. ओमजी उपाध्याय

निदेशक, शोध एवं प्रशासन, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

सचिव :

प्रो. दिग्विजय नाथ गौर्य

सचिव, भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त

सदस्य

डॉ. राजेश नायक
डॉ. मनोज तिवारी
डॉ. राजेश कुमार
डॉ. अंबिका तिवारी
डॉ. सौरभ कुमार मिश्र
डॉ. शैलेन्द्र उपाध्याय
डॉ. अजय कुमार सिंह
डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी
डॉ. मुकेश दुबे
डॉ. कामिनी सिंह
श्री ब्रजेश पाण्डेय
डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव
डॉ. ज्ञान प्रकाश मंगलम
डॉ. त्रिभुवन नाथ त्रिपाठी
डॉ. रत्नेश कुमार त्रिपाठी
डॉ. सच्चिदानन्द चौबे
डॉ. राजेश धर दुबे
डॉ. कन्हैया सिंह
डॉ. मुकेश उपाध्याय
डॉ. अमिता अग्रवाल
श्री शचीन्द्र मोहन
श्री संतोष कुमार ओझा

परामर्शदात्री समिति

प्रो. शिवाजी सिंह	पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय इतिहास सकलन योजना, नई दिल्ली
डॉ. देवी प्रसाद सिंह	कार्यकारी अध्यक्ष, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली
डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय	सगठन सचिव, अखिल भारतीय इतिहास सकलन योजना, नई दिल्ली
प्रो. हरिकेश बहादुर सिंह	मा. कुलपति, लोकनायक जयप्रकाश नारायण विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार
प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त	कार्यकारी अध्यक्ष, उ.प्र. हिन्दी सस्थान, लखनऊ, उ.प्र.
प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल	मा. कुलपति, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा	अध्यक्ष, उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, प्रयागराज, उ.प्र.
प्रो. वैद्यनाथ लाभ	मा. कुलपति, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, बिहार
प्रो. योगेन्द्र सिंह	मा. कुलपति, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया, उ.प्र.
प्रो. संजीव शर्मा	मा. कुलपति, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, चम्पारण, बिहार
प्रो. शंकर शरर्ण	एनसीईआरटी, नई दिल्ली
प्रो. सुष्मिता पाण्डेय	राष्ट्रीय संयोजक, महिला इतिहासकार परिषद, अ.भा.इ.सं.यो., नई दिल्ली
प्रो. सुजीत घोष	निदेशक, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन सस्थान, कोलकाता
प्रो. सच्चिदानन्द जोशी	सदस्य सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
प्रो. रघुवेन्द्र तँवर	सदस्य, भारतीय इतिहास अनुसधान परिषद, नई दिल्ली
प्रो. रहमान अली	सदस्य, भारतीय इतिहास अनुसधान परिषद, नई दिल्ली
प्रो. सुमन जैन	प्राचीन इतिहास विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ.प्र
प्रो. राजीव रंजन	सदस्य, भारतीय इतिहास अनुसधान परिषद, नई दिल्ली
डॉ. शरद हेबालकर	पूर्व महामत्री, अखिल भारतीय इतिहास सकलन योजना, नई दिल्ली
प्रो. संतोष कुमार शुक्ल	आचार्य, संस्कृत विभाग, जवाहर नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
डॉ. प्रज्ञा मिश्र	प्राचीन इतिहास विभाग, राम मनोहर लोहिया, अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक

पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज

प्रबन्धक, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड, गोरखपुर
मा. मुख्यमत्री, उ.प्र. शासन

संरक्षक

प्रो. उदय प्रताप सिंह

अध्यक्ष, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर
पूर्व कुलपति, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उ.प्र.

प्रो. विजय कृष्ण सिंह

मा. कुलपति, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र.

प्रो. महेश कुमार शरण

सेवानिवृत्त आचार्य, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार

अध्यक्ष

डॉ. प्रदीप कुमार राव

प्राचार्य, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

उपाध्यक्ष

डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

राजनीतिशास्त्र विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

सचिव

श्री सुबोध कुमार मिश्र

सह–सचिव, भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्ष प्रांत, गोरखपुर

संयोजक

डॉ. सौरभ कुमार सिंह

प्राचीन इतिहास विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

सदस्य

डॉ. विजय कुमार चौधरी
डॉ. प्रवीन्द्र कुमार शाही
डॉ. महेन्द्र प्रताप सिंह
डॉ. कृष्ण कुमार
डॉ. यशवन्त कुमार राव
सुश्री दीप्ति गुप्ता
डॉ. अनुभा श्रीवास्तव
श्री नवनीत कुमार सिंह
श्री जितेन्द्र कुमार प्रजापति
डॉ. वेंकट रमन पाण्डेय
डॉ. हनुमान प्रसाद उपाध्याय
डॉ. शालू श्रीवास्तव
डॉ. पल्लवी नायक
सुश्री अपूर्वा त्रिपाठी
डॉ. नीलम गुप्ता
श्रीमती कविता मन्ध्यान
डॉ. आरती सिंह
डॉ. प्रज्ञेश कुमार मिश्र
श्रीमती पुष्पा निषाद
श्री मंजेश्वर
श्रीमती शिप्रा सिंह
डॉ. अभिषेक कुमार सिंह
श्रीमती विमा सिंह
श्रीमती किरन सिंह
सुश्री रचना सिंह
श्रीमती साधना सिंह
श्री बृजभूषण लाल
डॉ. अजय कुमार निषाद
सुश्री सुनिधि गुप्ता
डॉ. सुधा शुक्ला

ICHR

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

द्वारा प्रायोजित

नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

तथा

भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रांत

द्वारा

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार

विषय पर

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125वीं एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

पौष शुक्ल अष्टमी एवं नवमी, वि.सं. 2076
(03 एवं 04 जनवरी, 2020 ई.)

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़ – गोरखपुर

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

☎ 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in • E-mail : mpmpg5@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार

पृथ्वी पर प्राणियों की उत्पत्ति एवं उनके विकास क्रम पर ज्ञान–विज्ञान की विविध विधाओं में अनवरत शोधपूर्ण अध्ययन जारी है। आदिमानव के रूप में जीवन की विकास यात्रा के एकाधिक दार्शनिक–वैज्ञानिक सिद्धान्त प्रतिपादित है। उपर्युक्त विकास–यात्रा पर सामान्यतः मान्य प्रतिपादित मतों का आधार विशुद्ध वैज्ञानिक है। सभ्यता के उद्‌भव एवं विकास के साथ विज्ञान के साथ–साथ साहित्य का विकास हुआ। सभ्यता के साथ–साथ संस्कृति विकसित हुई। वाचिक मानव ने लिपियों का विकास किया। भाषा–साहित्य मानव सभ्यता एवं संस्कृति के अभिव्यक्ति का आधार बना। मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के गर्भ से अपनी पहचान, आत्मगौरव, आत्मसम्मान इत्यादि प्रवृत्तियों का विकास स्वाभाविक था। इन भाव–प्रवृत्तियों ने श्रेष्ठतावाद को जन्म दिया। परिणामतः मानव–सभ्यताएं अपने मौलिक विकास के पथ पर अग्रसर हुईं। सीखने–सिखाने की प्रवृत्ति ने ही सभ्यता–संस्कृति को जन्म दिया। इसी प्रवृत्ति से मनुष्य एक दूसरे का अनुकरण कर सीख कर अपने एवं अपने समाज को अहर्निश श्रेष्ठ बनाने में जुटा रहा। मानव–समाज का यही प्रयत्न सभ्यता–संस्कृति के विकास की आधार–शिला बना।

हिन्दुकुश और हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं से आच्छादित समुद्र पर्यन्त भारतीय भूभाग में सरस्वती–सिन्धु नदी के तट पर विकसित वैदिक सभ्यता–संस्कृति कालान्तर में भारतीय संस्कृति अथवा हिन्दू संस्कृति के रूप में प्रतिष्ठित हुयी। भारतीय संस्कृति ने अपनी विकास यात्रा में जिन मानव–मूल्यों का सृजन किया वे वैश्विक हैं, पूरे मानव–समाज के लिए हैं। आत्म–शुद्धिकरण, युगानुकुल परिवर्तन की क्षमता, विश्व की सभी संस्कृतियों से सीखने, सम्पूर्ण मानव–समाज के कल्याण की भावना, विश्व की सभी संस्कृतियों के सम्मान के भाव के कारण भारतीय संस्कृति अपने उद्‌भव–काल से लेकर अब तक निरन्तर विकासमान है। पुरूषार्थ, संस्कार, आश्रम–व्यवस्था, परिवार, जैसे सामाजिक–व्यवस्थाओं का अनुभवजन्य प्रतिपादन कर भारतीय संस्कृति ने सर्वस्वीकार्य मार्ग दिया। जन्म–पुनर्जन्म, विविध मत–पंथ के समन्वय, विविधता में एकता का दर्शन, निराकार ब्रह्म तक पहुंचने के विविध साकार मार्गों की भी स्वीकृति, योग–अध्यात्म की विशिष्ट अवधारणा, समय–समय परलोक–कल्याणार्थ मतों का जन्म, विकास एवं प्रसार ने भारतीय संस्कृति को विश्व व्यापी बनाया।

वैदिक–हड़प्पा संस्कृति के समय भारत का मेसोपोटामिया, मिस्र, यूनान सहित दुनिया के देशों से व्यापारिक–सामाजिक सम्बन्धों के प्रमाण उपलब्ध हैं। बौद्धमत का मध्य एशिया तथा चीन में प्रभाव अब तक देखा जा सकता है। मौर्य सम्राट अशोक का मिस्र तक के देशों में लोक कल्याणकारी कार्यों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के प्रसार की दुनिया साक्षी रही है। पंतजलि एवं महायोगी गोरक्षनाथ प्रवर्तित योग की स्वीकृति विश्व योग दिवस के रूप में अभी–अभी 2014 ई. में प्राप्त हुई है। दुनिया के लगभग 192 देशों में योग की स्वीकृति भारतीय संस्कृति के वर्तमान प्रभाव की सूचक है। आतंकवाद से जूझ रही दुनिया को भारतीय संस्कृति के शान्तप्रिय योग–अध्यात्मिक जीवन–दृष्टि में समाधान दिखायी दे रहा है। भौतिक विकास के चरम बिन्दु की ओर बढ़ते विश्व में असन्तोष, गलाकाट प्रतिस्पर्धा, अशान्त मन एक गम्भीर चुनौती बना हुआ है। अनवरत प्रगति पर बढ़ता मानव समाज सुख–शान्तिपूर्ण जीवन से दूर होता हुआ महसूस कर रहा है। ऐसे में भारतीय संस्कृति के सनातन–जीवन–मूल्यों की प्रासंगिकता पुनः बढ़ती जा रही है।

श्री गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर द्वय महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने अपना पूरा जीवन भारतीय संस्कृति के प्रसार एवं लोक–कल्याण हेतु समर्पित कर दिया था। यह वर्ष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125वीं जयन्ती वर्ष तथा अवेद्यनाथ जी महाराज का जन्म शताब्दी वर्ष है। अतः उनकी पावन स्मृति में भारतीय संस्कृति के विविध पक्षों का स्मरण किया जाय एवं उन्हें जीवनोपयोगी बनाया जाय। भारतीय संस्कृति का लोक–कल्याण एवं लोक–मंगल की दृष्टि से वैश्विक–उपयोगिता के लिए आवश्यक है कि उसके वैश्विक प्रभावों का मूल्यांकन किया जाय। भारतीय संस्कृति के अभ्युदय से लेकर अद्यतन उसके वैश्विक प्रसार का ऐतिहासिक विवेचन उन कारणों को खोजेगा जो भारतीय संस्कृति के लोक–प्रसिद्ध होने के आधार थे। वे तथ्य वर्तमान भारतीय समाज के साथ–साथ वैश्विक समाज को भौतिक विकास एवं सुख–शान्ति एक साथ प्राप्त करने का मार्ग सुझा सकते हैं। यह विचार दर्शन लौकिक के साथ पारलौकिक जीवन, भोग के साथ योग, उपलब्धि के साथ त्याग, विश्राम के साथ श्रम, आराम के साथ तप, स्वहित के साथ परहित, विज्ञान के साथ ज्ञान, वेदना के साथ संवेदना जैसे जीवन–मूल्यों के साथ मानव–जीवन के सौन्दर्य की पुनर्प्रतिष्ठा में सहायक होगा। अतः **'पुमान् पुमांस परि पातु विश्वतः (ऋग् 6.75.14); 'यांश्च पश्यामि यांश्च न तेशु मा सुमतिं कृधि। (अथर्व 17.1.17); द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति; पृथ्वी शान्तिरायः.....। (यजु 36.17) समानं मनः सह चित्तमेशाम्। (ऋग् 10.191.3); माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याम् (अथर्व.12.1.12)** इत्यादि विश्व–भावना समेटे भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार विषय पर विचार–विमर्श एवं हो रहे शोधों से अवगत होने की दृष्टि से महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर ने **'भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार'** विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी करने का निर्णय लिया। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के आर्थिक सहयोग से आयोजित यह राष्ट्रीय संगोष्ठी भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को रेखांकित करने एवं विश्व में उसके प्रसार की प्राचीन तथा वर्तमान प्रासंगिता को प्रस्तुत कर लोक–कल्याण का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होगी। शोधार्थी संगोष्ठी के विषय के विविध आयामों के किसी भी विषय/शीर्षक पर अपना शोधपत्र दे सकते हैं। सुविधा की दृष्टि से उपर्युक्त विषय को निम्न उप–विषयों/शीर्षकों में विभाजित किया गया है–

1. भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार।
2. दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया और हिन्दू संस्कृति।
3. दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया के हिन्दू सम्राट्।
4. विश्व में रामायण और महाभारत।
5. विश्व मे संस्कृत भाषा एवं साहित्य का प्रसार।
6. थाईलैण्ड के राम नामधारी नरेश।
7. कम्बोडिया का विशाल विष्णुमन्दिर–अंगकोरवाट।
8. इण्डोनेशिया, लाओस तथा वियतनाम में शैव धर्म।
9. दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया में नाथ पंथ का प्रसार
10. दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया के महान नरेश
11. अफगानिस्तान में बौद्ध धर्म।
12. थाईलैण्ड का राजकीय धर्म–बौद्ध धर्म।
13. विश्व में बौद्ध भिक्षुओं द्वारा कृत सामाजिक कल्याण के कार्य।
14. दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया में राजा के दैवीय स्वरूप की अवधारणा।
15. विश्व में भारतीय धर्म और राजनीति।
16. दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया में भारतीय शासन तंत्र का प्रभाव।
17. विश्व में हिन्दी एवं भोजपुरी।
18. दक्षिण एशियाई देशों के साथ भारत के आर्थिक सम्बन्ध।
19. दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया की भौगोलिक विशेषताएं।
20. कम्बोडिया का देवराज और बुद्धराज मत।
21. विदेशी यात्रियों का भारत–वर्णन।

शोध-प्रपत्र

संगोष्ठी में प्रस्तुत शोध–प्रपत्र/आलेख में विषय वस्तु का उद्देश्य, प्रयुक्त विधितन्त्र एवं निष्कर्ष का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए। सूचना प्रपत्र में निर्दिष्ट विषयों की सीमा में ही शोध–प्रपत्र स्वीकृत किये जायेंगे। शोध–पत्र/आलेख लगभग 2500 शब्दों में होना चाहिए। शोध पत्र/आलेख 15 दिसम्बर 2019 तक ई–मेल bissgkp2017@gmail.com पर पहुँच जाना चाहिए। प्राप्त शोध पत्र/आलेखों का प्रकाशन संगोष्ठी के पूर्व ही हो जायेगा। शोध – प्रपत्र ए–4 आकार के कागज पर कम्प्यूटर कम्पोजिंग एवं सी.डी., (वाकमैन चाणक्य) महाविद्यालय के पते पर भेजें। शोध पत्र संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में स्वीकृत होंगे। संस्कृत एवं हिन्दी भाषा में लिखित शोधपत्र वॉकमैन चाणक्या तथा अंग्रेजी भाषा में लिखित शोध पत्र टाइम्स न्यू रोमन फांट में होना चाहिए।

पंजीयन

पंजीयन शुल्क रू. 500/– है। आमन्त्रित अतिथियों/विषय–विशेषज्ञों को पंजीयन कराने की आवश्यकता नहीं होगी। पंजीयन शुल्क बैंक ड्राफ्ट के रूप में **'प्राचार्य, महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़'** के नाम से अथवा नकद संगोष्ठी के समय पंजीकरण के दौरान देय अनुमन्य होगा।

यात्रा/आवास/भोजन-व्यवस्था

आमंत्रित अतिथियों एवं विषय विशेषज्ञों को उनके आने–जाने का व्यय आयोजन समिति द्वारा देय होगा। सभी के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से निःशुल्क रहेगी किन्तु आने की पूर्व सूचना देना आवश्यक है।

गोरखपुर

गोरखपुर महायोगी गुरु गोरखनाथ की तपोभूमि है। यह नगर उत्तर–पूर्व रेलवे का मुख्यालय होने के कारण देश के लगभग सभी शिक्षा केन्द्रों/महानगरों से रेल, सड़क तथा वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है। नगर के पार्श्व में अनेक दर्शनीय एवं ऐतिहासिक स्थल स्थित हैं। भगवान बुद्ध का गृहनगर कपिलवस्तु (सिद्धार्थनगर जनपद में स्थित वर्तमान पिपहरवा) यहाँ से लगभग 90 किमी. की दूरी पर है। गोरखपुर नगर से भगवान बुद्ध की निर्वाण–स्थली कुशीनगर 50 किमी. की दूरी पर स्थित है। मध्ययुगीन सन्त एवं समाज सुधारक तथा हिन्दू–मुस्लिम एकता के पोषक सन्त कबीर की निर्वाण स्थली मगहर यहाँ से 20 किमी. दूरी पर स्थित है। यहाँ से नेपाल सीमा की दूरी लगभग 100 किमी. है। नेपाल के दर्शनीय स्थलों के भ्रमण के लिए सड़क–मार्ग से सुगमतापूर्वक जाया जा सकता है। काठमाण्डु गोरखपुर से 400 किमी. की दूरी पर है। इन समस्त स्थलों की यात्रा बस अथवा टैक्सी द्वारा सरलतापूर्वक की जा सकती है। नगर–क्षेत्र में भी अनेक दर्शनीय स्थल हैं, जिनमें गोरखनाथ–मंदिर, गीता वाटिका, गीता प्रेस, विष्णु मंदिर आदि प्रमुख हैं। जनवरी माह में गोरखपुर का मौसम अत्यन्त ठंडा रहता है। रात्रि में अधिक ठंड पड़ती है तथा तापमान कभी–कभी 2° से 3° पहुँच जाता है। अतः अपने साथ पर्याप्त गर्म कपड़े रखें।

दिग्विजयनाथ मौर्य
सचिव
भारतीय इतिहास संकलन समिति
गोरक्षप्रान्त
मो. नं. : 7007747982

सौरभ कुमार सिंह
संगोष्ठी संयोजक
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड
गोरखपुर
मो. नं. : 9415442099

सुबोध कुमार मिश्र
आयोजन सचिव
कनिष्ठ शोध अध्येता (ICHR)
नई दिल्ली
मो. नं. : 9452971570

Scanned with OKEN Scanner

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली
द्वारा प्रायोजित
नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर
तथा
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
द्वारा

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार

विषय पर

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125वीं एवं
राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(03 एवं 04 जनवरी, 2020)

उद्घाटन

03 जनवरी, 2020

अध्यक्ष :डॉ. महेश कुमार शरण, पूर्व अध्यक्ष
:भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त

मुख्य अतिथि :डॉ. मेधांकर रवि, अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष
:विश्व बुद्धिष्ट मिशन, जापान

मुख्य वक्ता :डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय, संगठन सचिव
:अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

बीज वक्तव्य :प्रो. प्रेमशंकर श्रीवास्तव, अतिथि आचार्य
:नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, बिहार

विशिष्ट अतिथि :प्रो. शीतला प्रसाद सिंह, विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग
:दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

समारोप

04 जनवरी, 2020

अध्यक्ष :प्रो. उदय प्रताप सिंह, प्रबन्धक
:महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

मुख्य अतिथि :डॉ. कुमार रत्नम, सदस्य सचिव
:भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

मुख्य वक्ता :प्रो. संतोष कुमार शुक्ल, आचार्य, संस्कृत विभाग
: जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

विशिष्ट अतिथि :डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय, संगठन सचिव
:अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

पंजीकरण : प्रातः 08.00 बजे से
अल्पाहार : प्रातः 08.00 बजे से 09.00 बजे तक

03 जनवरी, 2020

उदघाटन	:प्रातः 09.15 से 10.45 बजे
प्रथम तकनीकी सत्र	:प्रातः 11.00 से 01.00 बजे
भोजन	:अपराह्न 01.00 से 02.00 बजे
द्वितीय तकनीकी सत्र	:अपराह्न 02.00 से 04.00 बजे
चाय	:सायं 04.00 बजे

04 जनवरी, 2020

सामूहिक परिचर्चा	:प्रातः 09.40 से 10.45 बजे	
तृतीय तकनीकी सत्र	:प्रातः 11.00 से 01.00 बजे	समानान्तर सत्र
द्वितीय तकनीकी सत्र	:प्रातः 11.00 से 01.00 बजे	समानान्तर सत्र
भोजन	:अपराह्न 01.00 से 02.00 बजे	
समापन	:सायं 02.00 से 03.30 बजे	
प्रमाण–पत्र वितरण	:सायं 03.30 बजे से	

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर, तथा
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
द्वारा

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार

विषय पर

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125वीं एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(03 एवं 04 जनवरी, 2020)

mn?kkVu l= 03 tuojh] 2020

समय – प्रातः 09.15–10.45

मंचासीन अतिथि

अध्यक्ष – प्रो. महेश कुमार शरण
(पूर्व अध्यक्ष, भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त)

मुख्य अतिथि – डॉ. मेधांकर रवि
(अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व बुद्धिष्ट मिशन)

मुख्य वक्ता – डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय
(राष्ट्रीय संगठन सचिव, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली)

विशिष्ट अतिथि – प्रो. शीतला प्रसाद सिंह
(विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, दी.द.उ.गो.वि.वि.गोरखपुर)

बीज–वक्तव्य – डॉ. प्रेमशंकर श्रीवास्तव
(अतिथि आचार्य, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा, बिहार)

संचालक – श्री सुबोध कुमार मिश्र
(सह–सचिव, भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रांत)

क्रमशः .....

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर, तथा
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
द्वारा

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार

विषय पर

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125वीं एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(03 एवं 04 जनवरी, 2020)

{k.k & vu{k.k

प्रार्थना सभा	–	09.20
मंच आमंत्रण, दीप प्रज्वलन एवं पुष्पांजलि	–	09.25–09.26
मंगलपाठ (संघ भिक्षुओं द्वारा)	–	09.26–09.28
अतिथि परिचय एवं स्वागत	–	09.28–09.30
उत्तरीय एवं स्मृति चिन्ह द्वारा अतिथियों का सम्मान (प्राचार्य द्वारा)	–	09.30–09.32
पुस्तक विमोचन	–	09.32–09.34
बीज वक्तव्य	–	09.34–09.45
कुलगीत	–	09.45–09.47
उद्‌बोधन मुख्य वक्ता	–	09.47–10.10
उद्‌बोधन विशिष्ट वक्ता	–	10.10–10.20
एकल गीत (निर्माणों के पावन युग में .....)	–	10.20–10.22
उद्‌बोधन मुख्य अतिथि	–	10.22–10.42
अध्यक्षीय उद्‌बोधन एवं आभार	–	10.42–10.48
वन्दे मातरम्	–	10.48–10.50

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर, तथा
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
द्वारा

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार

विषय पर

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125वीं एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(03 एवं 04 जनवरी, 2020)

lekiu l= 04 tuojh] 2020

समय – अपराह्नः 02:00–03:30

मंचासीन अतिथि

अध्यक्ष – प्रो. उदय प्रताप सिंह
(प्रबन्धक, महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर)

मुख्य अतिथि – डॉ. कुमार रत्नम
(सदस्य सचिव, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली)

मुख्य वक्ता – प्रो. संतोष कुमार शुक्ल
(आचार्य, संस्कृत विभाग, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)

विशिष्ट अतिथि – डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय
(राष्ट्रीय संगठन सचिव, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली)

प्राचार्य – डॉ. प्रदीप कुमार राव
(महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर)

संचालक – डॉ. अविनाश प्रताप सिंह
(विभागाध्यक्ष, राजनीतिशास्त्र विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर)

क्रमशः .....

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर, तथा
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
द्वारा

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार

विषय पर

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125वीं एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(03 एवं 04 जनवरी, 2020)

{k.k & vu{k.k

मंच आमंत्रण, दीप प्रज्वलन एवं पुष्पांजलि	–	02:00
अतिथि परिचय एवं स्वागत	–	02.00–02.05
उत्तरीय एवं स्मृति चिन्ह द्वारा अतिथियों का सम्मान (प्राचार्य द्वारा)	–	02.05–02.10
कुलगीत	–	02.10–02.13
संगोष्ठी प्रतिवेदन (प्राचार्य द्वारा)	–	02.13–02.20
उद्‌बोधन मुख्य वक्ता	–	02.20–02.40
उद्‌बोधन विशिष्ट वक्ता	–	02.40–02.50
एकल गीत (निर्माणों के पावन युग में .....)	–	02.50–02.55
उद्‌बोधन मुख्य अतिथि	–	02.55–03.20
अध्यक्षीय उद्‌बोधन	–	03.20–03.38
वन्दे मातरम्	–	03:38–03:40

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर, तथा
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
द्वारा

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार

विषय पर

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125वीं एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(03 एवं 04 जनवरी, 2020)

iFke rduhdh l=

03 जनवरी, 2020, समय–11.15 से 01.00

मंचासीन अतिथि

अध्यक्ष	–	प्रो. मुकुन्द शरण त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग (दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)
सह–अध्यक्ष	–	डॉ. रामप्यारे मिश्र, आचार्य, प्राचीन इतिहास विभाग (दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)
विषय विशेषज्ञ	–	प्रो. प्रेमशंकर श्रीवास्तव, अतिथि आचार्य, (नवनालन्दा महाविहार, नालन्दा, बिहार)
संचालक	–	डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी (पूर्व फेलो, आई.सी.एच.आर)
प्रतिवेदक	–	डॉ. कन्हैया सिंह (पोस्ट डाक्टोरल फेलो, यू.जी.सी.)

क्षण–अनुक्षण

अतिथि परिचय एवं स्वागत	11:15 – 11:17
शोध पत्र वाचन	11:17 – 11:40
उद्‌बोधन विषय विशेषज्ञ	11:40 – 12:30
उद्‌बोधन सह–अध्यक्ष	12:30 – 12:40
अध्यक्षीय उद्‌बोधन	12:40 – 01:00

प्रथम तकनीकी सत्र में प्रस्तुति हेतु शोध पत्र

1. डॉ. प्रकाश कुमार झा –
2. डॉ. बबिता कुमारी –
3. डॉ. कृष्ण कुमार –
4. श्री सुमित गुप्ता –

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर, तथा
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
द्वारा

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार

विषय पर

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125वीं एवं
राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(03 एवं 04 जनवरी, 2020)

f}rh; rduhdh l=

03 जनवरी, 2020, समय–02.15 से 04.00

मंचासीन अतिथि

अध्यक्ष – डॉ. सुशील कुमार पाण्डेय, से.नि. आचार्य संस्कृत विभाग
(सन्त तुलसीदास पी.जी. कालेज, कादीपुर, सुल्तानपुर)

सह–अध्यक्ष – प्रो. दिग्विजयनाथ मौर्य, आचार्य, प्राचीन इतिहास विभाग पुरातत्व एवं संस्कृत विभाग
(दीनदयाल उपाध्यय गोरखपुर विश्वविद्यलाय, गोरखपुर)

विषय विशेषज्ञ – डॉ. प्रभास कुमार झा, सहायक सचिव, क्षेत्रीय कार्यालय
(माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ0प्र0, वाराणसी)

संचालक – डॉ. आशुतोष त्रिपाठी
(भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रांत)

प्रतिवेदक – डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी
(पूर्व फेलो, आई.सी.एच.आर)

क्षण–अनुक्षण

अतिथि परिचय एवं स्वागत	02:15–02:20
शोध पत्र वाचन	02:20–02:50
उद्बोधन विषय विशेषज्ञ	02:50–02:30
उद्बोधन सह–अध्यक्ष	03:30–03:40
अध्यक्षीय उद्बोधन	03:40–04:00

द्वितीय तकनीकी सत्र में प्रस्तुति हेतु शोध पत्र

1. प्रो. प्रेमशंकर श्रीवास्तव –
2. डॉ. ऋषि कपूर –
3. डॉ. अमिता अग्रवाल –
4. डॉ. सुमन सिंह –

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रायोजक

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर, तथा
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
द्वारा

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार

विषय पर

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125वीं एवं
राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(03 एवं 04 जनवरी, 2020)

r'rh; rduhdh l=

04 जनवरी, 2020, समय–11.00 से 01.00

मंचासीन अतिथि

अध्यक्ष – प्रो. राजवन्त राव, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग (दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)

सह–अध्यक्ष – प्रो. प्रज्ञा चतुर्वेदी, आचार्य, प्राचीन इतिहास विभाग पुरातत्व एवं संस्कृत विभाग (दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)

विषय विशेषज्ञ – डॉ. राकेश कुमार सिन्हा, शोध अन्वेषक (डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान, पटना, बिहार)

संचालक – डॉ. प्रज्ञेश कुमार मिश्र, प्रभारी मनोविज्ञान (महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर)

प्रतिवेदक – डॉ. सलिल कुमार पाण्डेय (पोस्ट डाक्टोरल फेलो, आई.सी.एस.एस.आर)

क्षण–अनुक्षण

अतिथि परिचय एवं स्वागत	11:00–11:05
शोध पत्र वाचन	11:05–11:35
उद्बोधन विषय विशेषज्ञ	11:35–12:15
उद्बोधन सह–अध्यक्ष	12:15–12:30
अध्यक्षीय उद्बोधन	12:30–01:00

तृतीय तकनीकी सत्र में प्रस्तुति हेतु शोध पत्र

1. डॉ. सचिन राय –
2. डॉ. अंजना राय –
3. डॉ. ध्रुव कुमार –
4. डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी –

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी "बी"

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

प्रायोजक

ICHR

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

आयोजक

महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर

एवं

अखिल, भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित
नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र
महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर, तथा
भारतीय इतिहास संकलन समिति, गोरक्षप्रान्त
द्वारा

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार

विषय पर

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 125वीं एवं
राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष

के पावन अवसर पर आयोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

(03 एवं 04 जनवरी, 2020)

prFk rduhdh l=

04 जनवरी, 2020, समय–11.00 से 01.00

मंचासीन अतिथि

अध्यक्ष – प्रो. विपुला दूबे, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग
(दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)

सह–अध्यक्ष – प्रो. ध्यानेन्द्र नारायण दूबे, आचार्य, प्राचीन इतिहास विभाग पुरातत्व एवं संस्कृत विभाग
(दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)

विषय विशेषज्ञ – डॉ. ध्रुव कुमार

संचालक – डॉ. अजय कुमार निषाद, प्रवक्ता, भूगोल विभाग
(महाराणा प्रताप पी. जी. कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर)

प्रतिवेदक – डॉ. सचिन राय
(पूर्व आई.सी.एच.आर फेलो)

क्षण–अनुक्षण

अतिथि परिचय एवं स्वागत	11:00–11:05
शोध पत्र वाचन	11:05–11:35
उद्बोधन विषय विशेषज्ञ	11:35–12:15
उद्बोधन सह–अध्यक्ष	12:15–12:30
अध्यक्षीय उद्बोधन	12:30–01:00

चतुर्थ तकनीकी सत्र में प्रस्तुति हेतु शोध पत्र

1. डॉ. प्रियंका –
2. डॉ. कन्हैया सिंह –
3. डॉ. बृजेश पाण्डेय –

संगोष्ठी रिपोर्ट

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार

पृथ्वी पर प्राणियों की उत्पत्ति एवं उनके विकास क्रम पर ज्ञान–विज्ञान की विविध विधाओं में अनवरत शोधपूर्ण अध्ययन जारी है। आदिमानव के रूप में जीवन के विकास यात्रा के एकाधिक दार्शनिक–वैज्ञानिक सिद्धान्त प्रतिपादित है। उपर्युक्त विकास यात्रा पर सामान्यतः मान्य प्रतिपादित मतों का आधार विशुद्ध वैज्ञानिक है। सभ्यता के उद्‌भव एवं विकास के साथ विज्ञान के साथ–साथ साहित्य का विकास हुआ। सभ्यता के साथ–साथ संस्कृतियाँ विकसित हुई। वाचिक मानव ने लिपियों का विकास किया। भाषा–साहित्य मानव सभ्यता एवं संस्कृति के अभिव्यक्ति का आधार बना। मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के गर्भ से अपनी पहचान, आत्मगौरव, आत्मसम्मान इत्यादि प्रवृत्तियों का विकास स्वाभाविक था। इन भाव–प्रवृत्तियों ने श्रेष्ठतावाद को जन्म दिया। परिणामतः मानव सभ्यताएं अपने मौलिक विकास के पथ पर अग्रसर हुई। सीखने–सिखाने की प्रवृत्ति ने ही सभ्यता–संस्कृति को जन्म दिया। इसी प्रवृत्ति से मनुष्य एक दूसरे का अनुकरण कर सीख कर अपने एवं अपने समाज को अहर्निश श्रेष्ठ बनाने में जुटा रहा। मानव–समाज का यही प्रयत्न सभ्यता–संस्कृति के विकास की आधार–शिला बना। हिन्दुकुश और हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं से आच्छादित समुद्र पर्यन्त भारतीय भूभागमें सरस्वती–सिन्धु नदी के तट पर विकसित वैदिक सभ्यता–संस्कृति कालान्तर में भारतीय संस्कृति अथवा हिन्दू संस्कृति के रूप में प्रतिष्ठित हुयी। भारतीय संस्कृति ने अपनी विकास यात्रा में जिन मानव–मूल्यों का सृजन किया वे वैश्विक हैं, पूरे मानव–समाज के लिए हैं। आत्म–शुद्धिकरण, युगानुकुल परिवर्तन की क्षमता, विश्व की सभी संस्कृतियों से सीखने, सम्पूर्ण मानव–समाज के कल्याण की भावना, विश्व की सभी संस्कृतियों के सम्मान के भाव के कारण भारतीय संस्कृति अपने उद्‌भव–काल से लेकर अब तक निरन्तर विकासमान है। पुरूषार्थ, संस्कार, आश्रम–व्यवस्था, परिवार, जैसे सामाजिक–व्यवस्थाओं का अनुभवजन्य प्रतिपादन कर भारतीय संस्कृति ने सर्वस्वीकार्य मार्ग दिया। जन्म–पुनर्जन्म, विविध मत–पंथ के समन्वय, विविधता में एकता का दर्शन, निराकार ब्रह्म तक पहुंचने के विविध साकार मार्गों की भी स्वीकृत, योग–अध्यात्म की विशिष्ट अवधारण, समय–समय पर लोक–कल्याणार्थ मतों का जन्म, विकास एवं प्रसार ने भारतीय संस्कृति को विश्व व्यापी बनाया। वैदिक–हड़प्पा संस्कृति के समय भारत का मेसोपोटामिया, मिस्र, यूनान सहित दुनिया के देशों से व्यापारिक–सामाजिक सम्बन्धों के प्रमाण उपलब्ध हैं। बौद्वमत का मध्य एशिया तथा चीन में प्रभाव अब तक देखा जा सकता है। मौर्य सम्राट अशोक का मिस्र तक के देशों में लोक कल्याणकारी कार्यों के माध्यम से भारतीय संस्कृति के प्रसार की दुनिया साक्षी रही है। पंतजलि एवं महायोगी गोरक्षनाथ प्रवर्तित योग की स्वीकृति विश्व योग दिवस के रूप में अभी–अभी 2014 ई. में प्राप्त हुई है। दुनिया के लगभग 192 देशों में योग की स्वीकृति भारतीय संस्कृति के वर्तमान प्रभाव की सूचक है। आतंकवाद से जूझ रही दुनिया को भारतीय संस्कृति के शान्तप्रिय योग अध्यात्मिक जीवन–दृष्टि में समाधान दिखायी दे रहा है। भौतिक विकास के चरम बिन्दु की ओर बढ़ते विश्व में असन्तोष, गलाकाट प्रतिस्पर्धा, अशान्त मन एक गम्भीर चुनौती बना हुआ है। अनवरत प्रगति पर बढ़ता मानव समाज में सुख–शान्तिपूर्ण जीवन से दूर होता हुआ महसूस

कर रहा है। ऐसे में भारतीय संस्कृति के सनातन–जीवन–मूल्यों की प्रासंगिकता पुनः बढ़ती जा रही है। भारतीय संस्कृति का लोक–कल्याण एवं लोक–मंगल की दृष्टि से वैश्विक–उपयोगिता के लिए आवश्यक है कि उसके वैश्विक प्रभावों का मूल्यांकन किया जाय। भारतीय संस्कृति के अभ्युदय से लेकर अद्यतन उसके वैश्विक प्रसार का ऐतिहासिक विवेचन उन कारणों को खोजेगा जो भारतीय संस्कृति में संस्कृति के लोक–प्रसिद्ध होने के आधार थे। वे तथ्य वर्तमान भारतीय समाज के साथ–साथ वैश्विक समाज को भौतिक विकास एवं सुख–शान्ति एक साथ प्राप्त करने का मार्ग सुझा सकते हैं। यह विचार दर्शन लौकिक के साथ पारलौकिक जीवन, भोग के साथ योग, उपलब्धि के साथ त्याग, विश्राम के साथ श्रम, आराम के साथ तप, स्वहित के साथ परहित, विज्ञान के साथ ज्ञान, वेदना के साथ संवेदना जैसे जीवन–मूल्यों के साथ मानव–जीवन के सौन्दर्य की पुनर्प्रतिष्ठा में सहायक होगा। अतः भारतीय संस्कृति में निहित मानव मूल्यों को समेटे **''भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार''** विषय पर विचार विमर्श एवं हो रहे शोधों से अवगत होने की दृष्टि से **महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज जंगल धूसड़, गोरखपुर** ने भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार विषय पर **दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी** कराने का निर्णय लिया। निर्णय के तहत महाविद्यालय द्वारा एक प्रस्ताव बनाकर भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली को भेजा गया। महाविद्यालय द्वारा प्रेषित, उक्त प्रस्ताव को भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली ने वित्तीय सहायता देते हुए अपनी स्वीकृति प्रदान की। तत्पश्चात महाविद्यालय अपनी पूरी क्षमता के साथ इस संगोष्ठी के सफल अयोजन हेतु प्राण–प्रण से लग गया। इस हेतु भारतीय इतिहास संकलन समिति गोरक्षप्रांत भी सक्रिय रूप से इस आयोजन में अपना यथा सम्भव सहयोग देने को सहर्ष तैयार हुई।

उद्घाटन सत्र (03 जनवरी, 2020 प्रातः 09:15 से)

नियत समय अर्थात 03 जनवरी, 2020 को संगोष्ठी का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन में मुख्य अतिथि के रूप में विश्व बुद्धिष्ट मिशन, जापान के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मेधांकर रवि उपस्थित रहे। अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय बतौर मुख्य वक्ता एवं दीनदयाल उपाध्याय गोखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. शीतला प्रसाद सिंह ने बतौर विशिष्ट अतिथि अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय इतिहास संकलन समिति गोरक्षप्रांत के पूर्व अध्यक्ष डॉ. महेश कुमार शरण जी ने की। उद्घाटन सत्र का **संचालन** भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के **कनिष्ठ शोध अध्येता (जे.आर.एफ) सुबोध कुमार मिश्र** ने किया। उद्घाटन समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. मेधांकर रवि का कहना था कि अपने मजबूत तार्किक एवं वैज्ञानिक आधार के कारण ही आज भारतीय संस्कृति समूचे विश्व की संस्कृति का मूलाधार बनकर वैश्विक स्तर पर मानव समाज के कल्याणार्थ प्रसरित हो रही है। **मुख्य अतिथि डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय** ने कहा कि विश्व में भारतीय संस्कृति का विस्तार व प्रभाव इस तरह व्याप्त है कि संसार के मानचित्र पर हम जहाँ कहीं की उंगली रखते है, किसी न किसी रूप में भारतीय संस्कृति हमे मानचित्र के उस भू–भाग में परिलक्षित अवश्य होती है। आधुनिक काल में

पश्चिमी ज्ञान परम्परा एवं मैक्समूलर व अन्य औपनिवेशिक इतिहासकारों ने जिस तरह से भारतीय संस्कृति एवं इतिहास को प्रस्तुत किया है, उसका आवरण हमें जनमानस के आँखों से हटाना है। **विशिष्ट अतिथि** के रूप में बोलते हुए **प्रो. शीतला प्रसाद सिंह** ने कहा कि भौतिकतावाद, उपभोगवाद तथा बढ़ते हुए वैश्विक आतंकवाद के त्रस्त दुनियाँ को सिर्फ और सिर्फ भारतीय संस्कृति की शांतिप्रिय आध्यत्मिक जीवन दृष्टि ही समाधान दे सकती है। कार्यक्रम की **अध्यक्षता** करते हुए **डॉ. महेश कुमार शरण** ने कहा कि सिद्ध गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वरों ने अपना सम्पूर्ण जीवन भारतीय संस्कृति के प्रसार में ही खपाया है। अपने ऐसे महान पूर्वजों के कार्य को आगे बढ़ाते हुए भारतीय संस्कृति के प्रसारार्थ हम सभी को आगे आना होगा। इस हेतु ऐसी विचार गोष्ठियों का अनवरत आयोजित होते रहना अनिवार्य है। भारतीय संस्कृति के सिद्धांत ही विश्व को भौतिक विकास एवं शांती एक साथ प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त कर सकते है। संपूर्ण दक्षिण–पूर्व एशिया में आज भी हजारों संस्कृत अभिलेख यत्र–तत्र बिखरे पड़े है, जिन्हें भारतीय संदर्भो में व्याख्यायित करना आवश्यक हैं ताकि दक्षिण–पूर्व एशिया सहित विश्व भर में भारतीय संस्कृति के प्रसार का ठीक–ठीक लेखन किया जा सके। इस उद्घाटन कार्यक्रम में नवनालन्दा महाविहार के प्राचीन इतिहास विभाग के अतिथि व्याख्याता **डॉ. प्रेमशंकर श्रीवास्तव** ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के दौरान मंचस्थ अतिथियों द्वारा डॉ. महेश कुमार शरण द्वारा लिखित पुस्तक **भगवतगीता : इन डे–टुडे लाइफ** का विमोचन किया गया। साथ ही साथ **तिब्बत, नेपाल, म्याँमार एवं कम्बोडिया** से आए हुए बौद्ध भिक्षुओं द्वारा मंगल पाठ प्रस्तुत किया। इस अवसर पर प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी प्रो. मनोज तिवारी, प्रो. ध्यानेन्द्र नरायण दूबे, डॉ. रामप्यारे मिश्र, डॉ. प्रकाश प्रियदर्शी, डॉ. उग्रसेन सिंह, डॉ. शैलेन्द्र उपाध्याय, डॉ. सुशील कुमार पाण्डेय, डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डॉ. सच्चिदानंद चौबे, डॉ. ज्ञान प्रकाश मंगलम, डॉ. सर्वेश शुक्ल, डॉ. अनुज प्रताप सिंह, डॉ. रविन्द्र आनन्द सहित विभिन्न विभागों के शोधार्थी एवं शहर के गणमान्य नागरिकों सहित महाविद्यालय के समस्त शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

'भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर नव नालन्दा बौद्ध मठ के बौद्ध भिक्षुओं द्वारा प्रस्तुत मंगल पाठ

'भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर प्रो. महेश कुमार शरण की पुस्तक 'श्रीमद्भगवद् गीता' का विमोचन

'भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर अध्यक्षीय उद्बोधन देतें प्रो. महेश कुमार शरण

'भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर व्याख्यान देते डॉ. बाल मुकुन्द पाण्डेय

'भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर व्याख्यान देते मुख्य अतिथि डॉ. मेधाकर रवि

'भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर व्याख्यान देते प्रो. प्रेमशंकर श्रीवास्तव एवं मंचस्थ बौद्ध शिक्षुगण

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर व्याख्यान देते प्रो. शीतला प्रसाद सिंह

'भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित अतिथि, शिक्षक एवं छात्र–छात्राएं

(03 जनवरी, 2020) प्रथम तकनीकी सत्र (प्रातः 11:00–01:00)

उद्घाटन सत्र के तुरन्त बाद प्रथम तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। आयोजन सत्र की **अध्यक्षता** हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकार **डॉ. अनुज प्रताप सिंह** ने की जबकि दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के सहायक आचार्य **डॉ. रामप्यारे मिश्र सह–अध्यक्ष** रहे। विषय विशेषज्ञ के रूप में नवनालन्दा महाविहार के अतिथि व्याख्याता **डॉ. प्रेमशंकर श्रीवास्तव** उपस्थित रहे। सत्र का **संचालन** आई. सी. एच. आर के पूर्वफेलो **डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी** ने तथा **प्रतिवेदन** यू.जी.सी. के फेलो **डॉ. कन्हैया सिंह** ने प्रस्तुत किया। इस सत्र में **डॉ. बबिता कुमारी, डॉ. विनोद रावत, डॉ. प्रभास कुमार झा, भिक्षु भरत नारायण** और **भिक्षु अंबिका** तथा **भिक्षु हिमानन्द** ने अपनें शोध पत्रों का वाचन किया। **डॉ. प्रेमशंकर श्रीवास्तव** ने अन्त में पढ़े गए शोध पत्रों का विश्लेषण करते हुए शोधार्थियों का मार्गदर्शन किया।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र में मंचस्थ अतिथिगण

दो दिवसीय राष्ट्रीय सांगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र का संचालन करते डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र में शोधपत्र प्रस्तुत करते डॉ. विनोद कुमार रावत

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र के अवसर पर उपस्थित अतिथि एवं प्रतिभागीगण

प्रथम तकनीकी सत्र में शोधपत्र प्रस्तुत करते बौद्ध भिक्षु

दो दिवसीय राष्ट्रीय सांगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र के दौरान विषय विशेषज्ञों से अपनी जिज्ञासा पूछता प्रतिभागी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र के अध्यक्ष डॉ. अनुज प्रताप सिंह को स्मृति चिन्ह एवं पुस्तक भेंट करते श्री सुधीर कुमार मिश्र

दो दिवसीय राष्ट्रीय सांगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र में उपस्थित मंचस्थ अतिथि एवं विषय विशेषज्ञ

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र में प्रतिभागी बौद्ध भिक्षु को स्मृति चिन्ह प्रदान करते प्रो. महेश कुमार शरण

दो दिवसीय राष्ट्रीय सांगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र के दौरान उपस्थित अतिथि एवं प्रतिभागीगण

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र में उपस्थित अतिथि, शिक्षक एवं छात्र–छात्राएं

सहभोज

प्रथम तकनीकी सत्र की समाप्ती पर 01 बजे से 02 बजे तक सह–भोज का आयोजन हुआ जिसमें उपस्थित समस्त अतिथि, विषय विशेषज्ञ एवं प्रतिभागियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

द्वितीय तकनीकी सत्र (03 जनवरी 2020, दोपहर 02:00–04:00बजे)

सहभोज के उपरान्त दोपहर 02 बजे से द्वितीय तकनीकी सत्र प्रारम्भ हुआ। इस सत्र के **अध्यक्ष** सन्त तुलसीदास पी.जी. कालेज, कादीपुर सुल्तानपुर के संस्कृत विभाग के पूर्व आचार्य **डॉ. सुशील कुमार पाण्डेय** रहे। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के आचार्य **प्रो. दिग्विजयनाथ मौर्य** सह–अध्यक्ष तथा माध्यमिक शिक्षा परिषद उ.प्र. के क्षेत्रीय सचिव **डॉ. प्रभास कुमार झा विषय विशेषज्ञ** के रूप में उपस्थित रहे। सत्र का **संचालन डॉ. आशुतोष त्रिपाठी** एवं **प्रतिवेदन डॉ. कन्हैया सिंह** ने किया। इस सत्र में **डॉ. सचिन राय, डॉ. अमिता अग्रवाल** तथा **डॉ. सुमन सिंह** सहित कुल 09 लोगों ने अपने शोध पत्र का वाचन किया और इसी के साथ विषय विशेषज्ञ तथा अध्यक्ष के उद्‌बोधन के पश्चात सत्र समाप्त हुआ।

दो दिवसीय राष्ट्रीय सांगोष्ठी के द्वितीय तकनीकी सत्र के दौरान अपना शोध पत्र प्रस्तुत करती डॉ. अमिता अग्रवाल

राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय तकनीकी सत्र में उद्‌बोधन देते डॉ. आशुतोष कुमार त्रिपाठी

राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय तकनीकी सत्र में शोधपत्र प्रस्तुत करती प्रतिभागी

राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय तकनीकी सत्र में अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते डॉ. सुशील कुमार पाण्डेय

राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय तकनीकी सत्र में उद्‌बोधन देते डॉ. प्रभास कुमार झा

दो दिवसीय राष्ट्रीय सांगोष्ठी के द्वितीय तकनीकी सत्र के दौरान अध्यक्षीय उद्बोधन देते डॉ. सुशील कुमार पाण्डेय

राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय तकनीकी सत्र में उद्बोधन देते प्रो. दिग्विजयनाथ मौर्य

राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय तकनीकी सत्र में उपस्थित छात्र–छात्राएं

मुक्त परिचर्चा सत्र (04 जनवरी, 2020 प्रातः 09:40 से 11:00)

संगोष्ठी के दूसरे दिन 04 जनवरी को प्रातः 09:45 बजे एक **मुक्त परिचर्चा सत्र** का आयोजन किया गया। मुक्त परिचर्चा सत्र की **अध्यक्षता** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के इतिहास विभाग के आचार्य **प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी** ने की। **सह–अध्यक्ष** बुद्ध पी.जी. कालेज कुशीनगर के इतिहास विभाग के अध्यक्ष **डॉ. ज्ञानप्रकाश मंगलम** रहे। मुक्त परिचर्चा सत्र में **विषय विशेषज्ञ** के रूप में **डॉ. मनोज तिवारी, डॉ. राजेश नायक, डॉ. धर्मचन्द्र चौबे, डॉ. अम्बिका तिवारी, डॉ. सर्वेश शुक्ल** आदि उपस्थित रहे। मुक्त परिचर्चा सत्र का विषय प्रवर्तन करते हुए प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी ने कहा कि भारतीय संस्कृति की जीवटता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सैकड़ो वर्षो के बाह्य आक्रमणों एवं शासन को झेलते हुए भी आज भी भारतीय संस्कृति अपनी प्रचंडता के साथ न सिर्फ विद्यमान है, अपितु दिन–प्रतिदिन इसका विस्तार होता जा रहा हैं। भारतीय संस्कृति जहॉ भी प्रसारित हुई वहॉ पर सद्भावना का ही प्रसार हुआ। भारतीय संस्कृति में जेहाद और क्रुसेज का कोई स्थान न तो कभी था और न ही आज है। साथ ही भारतीय संस्कृति में सेकुलेरिज्म और टालरेंस का भी कोई स्थान नहीं है। विषय

प्रवर्तन के उपरान्त एक–एक करके सभी विषय विशेषज्ञों ने अपनी बात रखी तथा अन्त में उपस्थित शोधार्थियों प्रतिभागियों एवं विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान मंचस्थ विषय विशेषज्ञों द्वारा किया गया।

भारतीय संस्कृति के विश्व में प्रसार विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय तकनीकी सत्र के अन्तर्गत समूह परिचर्चा में विशेष विशेषज्ञ एवं प्रतिभागीगण

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुक्त परिचर्चा सत्र के दौरान उपस्थित प्रतिभागीगण

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुक्त परिचर्चा सत्र के दौरान उद्बोधन देते हुए विषय विशेषज्ञ डॉ. राजेश नायक

भारतीय संस्कृति के विश्व में प्रसार विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय तकनीकी सत्र के अन्तर्गत समूह परिचर्चा में विशेष विशेषज्ञ एवं प्रतिभागीगण

भारतीय संस्कृति के विश्व में प्रसार विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय तकनीकी सत्र के अन्तर्गत समूह परिचर्चा में विशेष विशेषज्ञ एवं प्रतिभागीगण

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय तकनीकी सत्र के समूह परिचर्चा में विषय रखते डॉ धर्मचन्द चौबे एवं अन्य विषय विशेषज्ञ

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुक्त परिचर्चा सत्र के दौरान विषय विशेषज्ञों से प्रश्न पूछता महाविद्यालय का विद्यार्थी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुक्त परिचर्चा सत्र के दौरान उद्बोधन देते सत्र के सह–अध्यक्ष डॉ. ज्ञान प्रकाश मंगलम

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुक्त परिचर्चा सत्र के दौरान उद्बोधन देते हुए विषय विशेषज्ञ डॉ. मनोज तिवारी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुक्त परिचर्चा सत्र के दौरान विषय विशेषज्ञों से प्रश्न पूछता महाविद्यालय का विद्यार्थी

विशेष व्याख्यान कार्यक्रम (04 जनवरी 2020, प्रातः 09:40–11:00)

इस मुक्त परिचर्चा सत्र के **समानान्तर** ही एक विशेष व्याख्यान का आयोजन जगत–जननी माँ सीतासभागार में किया गया। **"नाथ पंथ द्वारा प्रवर्तित योग का दक्षिण एशिया में प्रसार"** विषय पर महाविद्यालय के प्राचार्य **डॉ. प्रदीप कुमार राव** ने पी.पी.टी. के माध्यम से व्याख्यान प्रस्तुत किया। अपनें व्याख्यान के अन्तर्गत सभा को सम्बोधित करते हुए डॉ. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि विश्व के विभिन्न प्रपंचो में उलझा हुआ मानव सुख–शान्ति की खोज में निरंतर प्रयत्नशील रहा है। इन सुखों और शान्ति की प्राप्ति के लिए विविध पंथ और संप्रदायों ने अनेक साधनाओं और पद्धतियों की खोज की है। वैदिक वाङमय से लेकर देश–विदेश की प्रायः प्रत्येक भाषाओं में उपासना व साधना प्रणालियों में सर्वत्र सभी क्षेत्रों में योग–विद्या के महत्व को स्वीकार किया गया है। योग हमारे देश की अमूल्य धरोहर एवं विशुद्ध रूप से भारतीय संस्कृति की देन है। महायोगी गोरखनाथ ने अपनी हठयोग साधना के अन्तर्गत अष्टांग योग के प्रथम दो अंगों यम और नियम को मनुष्य के चरित्र निर्माण का सर्वमान्य साधन माना है।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के विशेष व्याख्यान कार्यक्रम का संचालन करते डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी एवं मंचस्थ अतिथिगण

भारतीय संस्कृति के विश्व में प्रसार विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन समानान्तर तृतीय तकनीकी सत्र के अन्तर्गत विशेष व्याख्यान कार्यक्रम में मंचासीन आई. सी. एच. आर. नई दिल्ली के डॉ. कुमार रत्नम्, नवनालन्दा, बिहार के श्री मेधांकर रवि एवं प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के विशेष व्याख्यान कार्यक्रम के दौरान अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते महाविद्याल के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के विशेष व्याख्यान कार्यक्रम के दौरान अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते महाविद्याल के प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव

भारतीय संस्कृति के विश्व में प्रसार विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन समानान्तर तृतीय तकनीकी सत्र के अन्तर्गत विशेष व्याख्यान कार्यक्रम में महायोगी गुरू गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित योग का दक्षिण एशिया में प्रसार विषय पर व्याख्यान देते डॉ. प्रदीप कुमार राव एवं उपस्थित विद्वतजन तथा प्रतिभागीगणएवं प्रतिभागीगण

भारतीय संस्कृति के विश्व में प्रसार विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन समानान्तर तृतीय तकनीकी सत्र के अन्तर्गत विशेष व्याख्यान के अवसर पर उपस्थित विद्वतजन एवं प्रतिभागीगण

तृतीय तकनीकी सत्र (04 जनवरी, 2020, दोपहर 11:00–01:00 तक)

मुक्त परिचर्चा एवं विशेष व्याख्यान कार्यक्रम के तुरन्त बाद तृतीय तकनीकी सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र की **अध्यक्षता** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के आचार्य एवं पूर्व विभागाध्यक्ष **प्रो. राजवन्त राव** ने की। **सह–अध्यक्ष** के रूप में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के प्राचीन इतिहास विभाग की आचार्य **प्रो. प्रज्ञा चतुर्वेदी** तथा विषय विशेषज्ञ के रूप में **डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान पटना** के शोध अन्वेषक **डॉ. राकेश कुमार सिन्हा** जी उपस्थित रहे। सत्र का **संचालन** महाविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के प्रभारी **डॉ. प्रज्ञेश कुमार मिश्र** ने जबकि **प्रतिवेदन** आई.सी.एस.एस.आर. के फेलो **डॉ. सलिल कुमार पाण्डेय** किया। सत्र में **डॉ. कन्हैया सिंह डॉ. प्रमिला द्विवेदी** तथा **डॉ. ब्रजेश कुमार पाण्डेय** सहित कुल 08 लोगों ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। सत्र के अध्यक्ष **प्रो. राजवंत राव** ने अपने **अध्यक्षीय उद्बोधन** में कहा कि ऐशिया की चेतना का प्रतिनिधित्व करने वाले भारत ने यूरोप का

सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व करने वाले यूनान पर अमिट छाप छोड़ने का सफल प्रयास किया। जब दो संस्कृतियां सम्पर्क में आती हैं तब दोनों एक दूसरे पर प्रभाव डालती हैं। सिकन्दर के साथ आने वाले यूनानी लेखक, विद्वान एवं इतिहासकारों ने भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण तत्वों को अपने साथ यूनान ले जाने का कार्य किया, जिससे वहाँ इन संस्कृतियों का प्रचार हुआ। भारतीय नैतिकता का देवता ऋत्त के दैवीय तत्व निश्चित रूप से यूनानी देवता डीके में दिखाई देता है। जो यूनानी समाज में धर्म न्याय एवं नैतिकता का देवता है। भारतीय जातक कथा और युनानी इसोप कथाओं में साम्यता दिखाई देती है। जैन धर्म के स्यादवाद का प्रभाव यूरोपीय संशयवाद पर भी निश्चित रूप से देखा जा सकता है। मुद्राशास्त्र के इतिहास में यवन शासक अगाथाक्लीज की मुद्रा पर वासुदेव–संकर्षण एवं मिनेण्डर की मुद्रा पर गदा एवं चक्र का अंकन निश्चित रूप से भारतीय धर्म दर्शन को प्रस्तुत करता है। अगाथाक्लीज की तक्षशिला से प्राप्त मुद्राओं पर भी भारतीय धार्मिक प्रतीक चिन्ह देखे जा सकते हैं।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के तृतीय तकनीकी सत्र के अवसर पर प्रो. प्रज्ञा चतुर्वेदी को स्मृति चिन्ह प्रदान करते डॉ. विजय कुमार चौधरी

दो दिवसीय राष्ट्रीय सांगोष्ठी के तृतीय तकनीकी सत्र के दौरान विषय विशेषज्ञ डॉ. राकेश कुमार सिन्हा को स्मृति चिह्न भेंट करते महाविद्यालय के शिक्षक डॉ. विजय कुमार चौधरी

दो दिवसीय राष्ट्रीय सांगोष्ठी के तृतीय तकनीकी सत्र के दौरान मंच पर उपस्थित अतिथि एवं विषय विशेषज्ञ

राष्ट्रीय संगोष्ठी के तृतीय तकनीकी सत्र के अवसर पर प्रो. राजवंत राव को स्मृति चिन्ह प्रदान करते डॉ. विजय कुमार चौधरी

राष्ट्रीय संगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र के अवसर पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत करते प्रतिभागी श्री ब्रजेश पाण्डेय

चतुर्थ तकनीकी सत्र (04 जनवरी, 2020, दोपहर 11:00–01:00 तक)

तृतीय सत्र के ही समानान्तर श्री राम सभागार में चतुर्थ तकनीकी सत्र आयोजित हुआ जिसकी **अध्यक्षता** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विद्यालय गोरखपुर के प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष **प्रो. विपुला दुबे** जी ने की। **विषय विशेषज्ञ** के रूप में **डॉ. धर्मचन्द्र चौबे** एवं **डॉ. ध्रुव कुमार** जी उपस्थित रहे जबकि **सह–अध्यक्ष** दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के प्राचीन इतिहास विभाग के आचार्य **डॉ. ध्यानेन्द्र नारायण दूबे** थे। इस सत्र में **डॉ. अंजना राय, डॉ. इक्ष्वाकु सिंह, डॉ. प्रियंका, डॉ. अजय कुमार सिंह** सहित 09 शोध पत्रों का वाचन किया गया। अन्त में **अध्यक्षीय उद्बोधन** देते हुए प्रो. विपुला दुबे ने भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार के कारक के रूप में भारत की दानशीलता की प्रवृत्ति को प्रमुखता से उभारा जिसके चलते भारतीय संस्कृति की विदेशों में स्वीकार्यरता बढ़ी। उन्होंने भारतीय संस्कृति की दक्षिण एवं दक्षिण–पूर्व एशिया में प्रसार को प्रमाणों के साथ विस्तार से प्रस्तुत किया। उन्होंने अभिलेखों की संस्कृत भाषा, ब्राह्मी लिपि, काव्यात्मक शैली तथा मन्दिर निर्माण, तुलादान, गोदान जैसी परम्पराओं का संदर्भ देकर चम्पा, कम्बोज आदि क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति के प्रभाव को स्पष्ट किया। इसके अलावा राजाओं एवं स्थानों के नाम पर भारतीय प्रभाव को भी उन्होंने भारतीय संस्कषति प्रसार के प्रमाण के रूप में प्रस्तत किया। सत्र का **संचालन डॉ. सचिन राय** ने जबकि **प्रतिवेदन डॉ. प्रवीण कुमार त्रिपाठी** ने किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र का संचालन करते हुए डॉ. सचिन राय

दो दिवसीय राष्ट्रीय सांगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र के दौरान उपस्थित मंचस्थ अतिथि

राष्ट्रीय संगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र के अवसर पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत करती डॉ. अर्चना राय

दो दिवसीय राष्ट्रीय सांगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र के दौरान मंचस्थ अतिथि एवं अपना शोध पत्र प्रस्तुत करती प्रतिभागी डॉ. अंजना राय

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र के दौरान अपना शोध पत्र प्रस्तुत करते डॉ. अजय कुमार सिंह

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र के दौरान उद्‌बोधन देते विषय विशेषज्ञ डॉ. ध्रुव कुमार

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र के दौरान उद्‌बोधन देते डॉ. ध्यानेन्द्र नारायण दुबे

राष्ट्रीय संगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र के अवसर पर उपस्थित मंचस्थ अतिथि

दो दिवसीय राष्ट्रीय सांगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र के दौरान अध्यक्षीय उद्‌बोधन देती प्रो. विपुला दुबे

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र के दौरान उपस्थित महाविद्यालय के शिक्षक एवं प्रतिभागीगण

दो दिवसीय राष्ट्रीय सांगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र के दौरान प्रो. विपुला दुबे को स्मृति चिह्न भेट करते महाविद्यालय के शिक्षक डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र के दौरान सह-अध्यक्ष डॉ. ध्यानेन्द्र नारायण दुबे को संस्था के प्रकाशन भेट करते डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र के दौरान विषय विशेषज्ञ डॉ. धर्मचन्द चौबे को संस्था के प्रकाशन भेंट करते डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र के दौरान विषय विशेषज्ञ डॉ. ध्रुव कुमार को स्मृति चिह्न भेंट करते डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के तृतीय तकनीकी सत्र के दौरान उद्बोधन देते विषय विशेषज्ञ डॉ. प्रमिला द्विवेदी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र के दौरान उद्बोधन देते विषय विशेषज्ञ डॉ. धर्मचन्द चौबे

सहभोज

चतुर्थ तकनीकी सत्र की समाप्ति के पश्चात 01 बजे से 02 बजे तक सहभोज का कार्यक्रम योगीराज बाबा गम्भीरनाथ सेवाश्रम पर सम्पन्न हुआ। सहभोज कार्यक्रम में सभी सम्मनित अतिथि, विषय विशेषज्ञ , शोधार्थी एवं प्रतिभागीगण सम्मलित हुए।

समापन (04 जनवरी, 2020, दोपहर 02:00–04:00 तक)

सहभोज कार्यक्रम के उपरान्त दो दिनों तक चलने वाली इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन सत्र आयोजित हुआ। समापन सत्र की **अध्यक्षता** महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर के प्रबन्धक एवं वीरबहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर के पूर्व कुलपति **प्रो. उदय प्रताप सिंह** ने की। **मुख्य अतिथि** के रूप में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सदस्य सचिव, **डॉ. कुमार रत्नम** तथा **मुख्य वक्ता** के रूप में अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन मंत्री **डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय** उपस्थित रहे। **विशिष्ट अतिथि** के रूप में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के निदेशक,(शोध एवं प्रशासन) **डॉ. ओमजी उपाध्याय** का सानिध्य रहा। कार्यक्रम का **संचालन** महाविद्यालय के राजनीतिशास्त्र विभाग के प्रभारी **डॉ. अविनाश प्रताप सिंह** ने किया । मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय ने कहा कि– हमारे उपनिषदों में अनेक आख्यान प्रश्न के रूप में उपस्थित है। जिनके उत्तर निश्चित रूप से भारतीय सभ्यता के संवाहक प्रतीत होते हैं। उपनिषदों में कहा गया कि अध्ययन करने अथवा पर्वत चढ़ने का क्या लाभ है? इसका उत्तर देते हुए इन्हीं उपनिषदों में कहा गया कि विश्व के जानने की इच्छा के कारण ही जिज्ञासु दुर्गम पर्वतों को पार करते

हैं। इस आख्यान से स्पष्ट है कि भारत में अनादिकाल से विश्व को जानने एवं वहाँ अपनी संस्कृति का प्रसार करने की अद्भुत अभिरूचि उपस्थित थी। परन्तु विडम्बना यह है कि सैकड़ों वर्षों तक वाह्य आक्रमण एवं विदेशी शासकों के प्रभाव से आज हम अपना सांस्कृतिक विश्वास खो रहे हैं। विश्व में संस्कृति एवं मेधाओं का प्रसार पूर्व से हुआ। यही कारण है कि अधिकांश धर्म के लोग पूर्व की ओर मुंह कर अपना धार्मिक कर्म करते हैं। मुख्य अतिथि डॉ. कुमार रत्नम ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय परम्परा सूक्ष्म से स्थूल की ओर प्रसारित होने वाली संस्कृति है। यही कारण है कि हम भारतीय अपनी संवेदनाओं को सूक्तों से माध्यम से व्यक्त करते हैं। प्रस्तर काल में भी हमारे पूर्वजों ने गुफाओं में कला एवं आलेखन का अंकन कर अपनी सृजनात्मकता का अद्भुत नमूना प्रस्तुत किया। कुछ तथाकथित इतिहासकारों द्वारा भारत की विकृत्ति संस्कृति को प्रस्तत किया गया। अतः भारतीय साहित्यों के अध्ययन के अभाव में यहाँ की सांस्कृतिक उपलब्धता का आंकलन करना गलत होगा। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए विशिष्ट वक्ता डॉ. ओमजी उपाध्याय ने बताया कि हजार वर्षों से भारतीय संस्कृति को दूषित किया गया। ब्रिटिश इतिहासकारों ने हमें बर्बर एवं असभ्य बताया क्योंकि वे लोग भारतीय मूल एवं सांस्कृतिक मूल्य को समझ नहीं पाये। यहाँ के लोग जहाँ भी गए वहाँ धर्म, संस्कृति, उद्योग एवं वस्त्र आदि का व्यापक प्रयोग एवं प्रसार किया। न केवल एशिया बल्कि पश्चिमी देशों में भी भारतीय संस्कृति का संचार हुआ। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता करते हए प्रो. यू.पी. सिंह ने कहा कि भारतीय संस्कृति को हिन्दू संस्कृति कहना भी गलत नहीं होगा। सभ्यता के ऊषा काल से ही भारत की संत परंपरा 'वसुधैव कुटुम्बकम' की अवधारणा के अन्तर्गत भारतीय संस्कृति का प्रसार करने वाली रही है। वैदिक कालीन ऋषियों से लेकर अद्यतन सिद्ध गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वरों द्वारा भारत की इस सनातन परम्परा का निर्बाध रूप से निर्वहन किया जाता रहा है।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह में मंचस्थ विद्वत्तजन

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह का संचालन व आभार ज्ञापन करते डॉ. अविनाश प्रताप सिंह

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह में अध्यक्षीय उद्बोधन करते हुए प्रो. उदय प्रताप सिंह

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह में आई.सी.एच.आर. के सदस्य प्रो. कुमार रत्नम को स्मृति चिन्ह भेंट करते प्रो. उदय प्रताप सिंह

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह में उपस्थित अतिथि, शिक्षक एवं विद्यार्थीगण

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह में उपस्थित अतिथि, शिक्षक एवं विद्यार्थीगण

संगोष्ठी समापन के पश्चात आमंत्रित अतिथियों के साथ महाविद्यालय के प्राचार्य

राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं के जनक थे डॉ.भटनागर

जास., गोरखपुर: डॉ. शांति स्वरूप भटनागर भारत के प्रख्यात वैज्ञानिक थे। उन्होंने राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की स्थापना में प्रमुख भूमिका निभाई। इसलिए उन्हें भारत में राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं का जनक भी कहा जाता है।

यह बातें प्रतीक दास ने कही। वह बुधवार को महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज जंगल धूसड़ में भारतीय वैज्ञानिक डॉ.शांति स्वरूप भटनागर की स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कहा कि वर्ष 1947 में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद की स्थापना शांति स्वरूप भटनागर के नेतृत्व में की गई। बाद में उन्हें सीएसआइआर का प्रथम निदेशक भी बनाया गया।

डॉ.भटनागर ने भारत में कुल 12 राष्ट्रीय प्रयोगशालाएं स्थापित की जिनमें केंद्रीय खाद्य प्रौसेसिंग प्रौद्योगिकी संस्थान मैसूर, राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला पूणे, राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला नई दिल्ली, राष्ट्रीय मैटलर्जी प्रयोगशाला जमशेदपुर, केंद्रीय ईंधन संस्थान धनबाद आदि शामिल हैं। भारत में इनके महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए इनकी मृत्यु के उपरांत भटनागर पुरस्कार की शुरूआत हुई।

विश्व में सर्वमान्य है भारतीय संस्कृति

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : विश्व बुद्धिष्ट मिशन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष डा. मेधांकर रवि ने कहा कि भारतीय संस्कृति अपनी मजबूत तार्किक एवं वैज्ञानिक आधार के चलते विश्व में सर्वमान्य है। भारतीय संस्कृति ने अपनी विकास यात्रा में जिन मानव मूल्यों का सृजन किया वे न सिर्फ स्थानीय हैं, बल्कि वैश्विक हैं।

विश्व बुद्धिष्ट मिशन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष शुक्रवार को महाराणा प्रताप पीजी कालेज जंगल धूसड़ में कॉलेज और नेपाल शोध एवं अध्ययन केंद्र, भारतीय इतिहास संकलन समिति गोरक्षप्रांत की ओर से 'भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोठी के उद्घाटन सत्र को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ बाल मुकुंद पांडेय ने कहा कि भारतीय संस्कृति का मेसोपोटामिया, मिस्र, यूनान सहित दुनिया के अन्य देशों में प्रभावों के प्रमाण उपलब्ध हैं।

प्रो. शीतला प्रसाद सिंह ने कहा कि आज भौतिकतावाद, उपभोगवाद तथा आतंकवाद से जूझ रही दुनिया को सिर्फ भारतीय संस्कृति के शांतिप्रिय योग, आध्यात्मिक जीवन दृष्टि में समाधान दिखाई देता है। प्रो. महेश कुमार शरण ने कहा कि गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वरों ने अपना संपूर्ण जीवन भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में ही खपाया है। प्रो महेश शरण की लिखित पुस्तक 'भागवत गीता इन डे टुडे लाइफ' का अतिथियों ने विमोचन किया। गया से आए बौद्ध भिक्षुओं के दल ने मंगलपाठ किया।

प्राचार्य डा. प्रदीप राव ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन सुबोध मिश्र ने किया।

इस अवसर पर प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी, प्रो मनोज तिवारी, प्रो. ध्यानेंद्र नारायण दूबे, डॉ रामप्यारे मिश्र, डॉ प्रकाश प्रियदर्शी, डॉ उग्रसेन सिंह मौजूद रहे।

भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रचार विषय पर आयोजित गोष्ठी में मुख्य अतिथि डॉ. मेधांकर रवि को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते महाविद्यालय के प्राचार्य प्रदीप राव • जागरण

राष्ट्रीय संगोष्ठी

- समस्त मानव समाज के लिए है भारतीय संस्कृति : डा. मेधांकर रवि
- भागवत गीता इन डे टुडे लाइफ पुस्तक का हुआ विमोचन

भारतीय संस्कृति से मानव मूल्यों का सृजन

गोरखपुर | वरिष्ठ संवाददाता

भारतीय संस्कृति ने अपनी विकास यात्रा में जिन मानव मूल्यों का सृजन किया वे न सिर्फ स्थानीय हैं अपितु वैश्विक हैं, समस्त मानव समाज के लिए हैं। यही कारण है कि आत्म-शुद्धीकरण, युगानुकूल परिवर्तन की क्षमता, विश्व के अन्यान्य संस्कृतियों से सीखने, संपूर्ण मानव समाज के कल्याण की भावना तथा विश्व की समस्त संस्कृतियों के प्रति सम्मान की भावना के कारण भारतीय संस्कृति अपने उद्भवकाल से लेकर अब तक निरन्तर विकासमान है।

ये बातें भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित तथा नेपाल शोध एवं अध्ययन केन्द्र महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज जंगल धूसड़ तथा भारतीय इतिहास संकलन समिति गोरक्षप्रांत के संयुक्त तत्वावधान में 'भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार' विषय पर आयोजित संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए विश्व बुद्धिष्ट मिशन के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मेधांकर रवि ने कही। डॉ. रवि महन्त दिग्विजयनाथ के 125वें तथा राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ के जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। डॉ. रवि ने कहा कि अपने मजबूत तार्किक एवं वैज्ञानिक आधार के कारण ही आज भारतीय संस्कृति समूचे विश्व की संस्कृति का मूल आधार बनकर वैश्विक स्तर पर मानव समाज के कल्याणार्थ प्रसारित हो रही है। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय इतिहास संकलन समिति के पूर्व अध्यक्ष प्रो. महेश कुमार शरण ने की। नव नालन्दा महाविहार के आचार्य डॉ. प्रेमशंकर ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया। संचालन आईसीएचआर के रिसर्च फेलो सुबोध कुमार मिश्र ने किया। गया से आए हुए बौद्ध भिक्षुओं के दल ने मंगलपाठ प्रस्तुत किया।

प्रो. महेश शरण की किताब का हुआ विमोचन

इस अवसर पर प्रो. महेश कुमार शरण द्वारा लिखित पुस्तक 'भगवतगीता इन डे-टुडे लाइफ' का मंचस्थ अतिथियों ने विमोचन किया। उद्घाटन अवसर पर प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी, प्रो. मनोज तिवारी, प्रो. ध्यानेन्द्र नरायण दूबे, डॉ. रामप्यारे मिश्र, डॉ. प्रकाश प्रियदर्शी, डॉ. उग्रसेन सिंह, डॉ. शैलेन्द्र उपाध्याय, डॉ. सुशील कुमार पाण्डेय, डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डॉ. सच्चिदानंद चैबे, डॉ. ज्ञान प्रकाश मंगलम, डॉ. सर्वेश शुक्ल, डॉ. अनुज प्रताप सिंह, डॉ. रविन्द्र आनन्द आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

दूसरी संस्कृतियों पर भी हमारा प्रभाव

मुख्य वक्ता अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय ने कहा कि भारतीय संस्कृति का मेसोपोटामिया, मिश्र, यूनान सहित दुनिया के अन्य देशों में प्रभावों के प्रमाण उपलब्ध हैं। बौद्धमत का मध्य एशिया चीन तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रभाव अब तक देखा जा सकता है। विशिष्ट अतिथि डीडीयू के प्राचीन इतिहास विभागाध्यक्ष प्रो. शीतला प्रसाद सिंह ने कहा कि आज भौतिकतावाद, उपभोगवाद तथा आतंकवाद से जूझ रही दुनिया को सिर्फ और सिर्फ भारतीय संस्कृति के शांतिप्रिय योग आध्यात्मिक जीवन दृष्टि में समाधान दिखाई देता, भारतीय संस्कृति के वर्तमान प्रासंगिकता को स्वयं उद्घाटित करता है।

Scanned with OKEN Scanner

अमर उजाला
गोरखपुर | शनिवार, 4 जनवरी 2020 | 6

'स्थानीय नहीं वैश्विक है भारतीय संस्कृति'

अमर उजाला ब्यूरो

एमपीपीजी कॉलेज में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ

गोरखपुर। विश्व बुद्धिस्ट मिशन के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. मेधांकर रवि ने कहा कि भारतीय संस्कृति अपने मजबूत तार्किक एवं वैज्ञानिक आधार के चलते विश्व में सर्वमान्य है। भारतीय संस्कृति ने अपनी विकास यात्रा में जिन मानव मूल्यों का सृजन किया वे न सिर्फ स्थानीय हैं बल्कि वैश्विक हैं।

डॉ मेधांकर शुक्रवार को एमपीपीजी कॉलेज, जंगल धूसड़ में कॉलेज और नेपाल शोध एवं अध्ययन केंद्र, भारतीय इतिहास संकलन समिति गोरक्षप्रांत की ओर से 'भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। मुख्य वक्ता अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ बाल मुकुंद पांडेय ने कहा कि भारतीय संस्कृति का मेसोपोटामिया, मिस्र, यूनान सहित दुनिया के अन्य देशों में प्रभावों के प्रमाण उपलब्ध हैं। विशिष्ट अतिथि गोविवि के प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो शीतला प्रसाद सिंह ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम अध्यक्ष भारतीय इतिहास संकलन समिति के पूर्व अध्यक्ष प्रो. महेश कुमार शरण ने कहा कि श्रीगोरक्षपीठ के पीठाधीश्वरों ने अपना संपूर्ण जीवन भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में ही खपाया है। यह वर्ष महंत दिग्विजयनाथ की 125 वीं जयंती तथा महंत अवेद्यनाथ का जन्म शताब्दी वर्ष है। ऐसे महान पूर्वजों के कार्य को आगे बढ़ाते हुए भारतीय संस्कृति के प्रसार में हम सभी को आना होगा। गया से आए बौद्ध भिक्षुओं के दल ने मंगलपाठ किया। प्रो महेश शरण द्वारा लिखित पुस्तक 'भागवत गीता इन डे टुडे लाइफ' का अतिथियों ने विमोचन किया। इस अवसर पर प्राचार्य प्रदीप राव, प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी, प्रो मनोज तिवारी, प्रो. ध्यानेंद्र नरायण दूबे, डॉ रामप्यारे मिश्र, डॉ प्रकाश प्रियदर्शी, डॉ उग्रसेन सिंह, डॉ शैलेंद्र उपाध्याय, डॉ. सुशील कुमार पांडेय, डॉ. सुधाकर लाल श्रीवास्तव, डॉ. सच्चिदानंद चौबे, डॉ ज्ञान प्रकाश मंगलम, डॉ सर्वेश शुक्ला आदि उपस्थित थे।

हिन्दुस्तान • गोरखपुर • रविवार • 05 जनवरी 2020 • 06

सांस्कृतिक उपलब्धता का आंकलन जरूरी

संवाद

गोरखपुर | वरिष्ठ संवाददाता

भारतीय परम्परा सूक्ष्म से स्थूल की ओर प्रसारित होने वाली संस्कृति है। हमारे पूर्वजों ने गुफाओं में कला एवं आलेखन का अंकन कर अपनी सृजनात्मकता का अद्भुत नमूना प्रस्तुत किया। बाद में कुछ तथाकथित इतिहासकारों ने भारत की विकृत संस्कृति को प्रस्तुत किया।

ये बातें महाराणा प्रताप पीजी कॉलेज जंगल धूसड़ में 'भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रसार' विषय पर चल रही दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह में शनिवार को भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के सदस्य सचिव डॉ. कुमार रत्नम ने बतौर मुख्य अतिथि कही। मुख्य वक्ता अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय ने कहा कि एको अहं से सो अहं तक की यात्रा ही जीवन संस्कृति है। जन्म के समय किसी भी संस्कृति का बच्चा को अहं शब्द का उच्चारण करता है। विशिष्ट अतिथि डॉ. ओमजी उपाध्याय ने कहा कि हजार वर्षों से भारतीय संस्कृति को दूषित किया गया। प्रो. यूपी सिंह ने कहा कि भारतीय संस्कृति को हिन्दू संस्कृति कहना भी गलत नहीं होगा। संचालन डॉ. अविनाश प्रताप सिंह एवं प्रतिवेदन डॉ. कन्हैया सिंह ने प्रस्तुत किया।

एमपी पीजी कॉलेज में आयोजित संगोष्ठी के समापन समारोह में मंचासीन विद्वत जन।

संस्कृति के प्रसार के मूल में भारत की दानशीलता

अंतिम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता कर रही डीडीयू में प्राचीन इतिहास विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. विपुला दुबे ने भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार के कारक के रूप में भारत की दानशीलता की प्रवृति को प्रमुखता से उभारा। इस सत्र के सहअध्यक्ष प्रो. ध्यानेन्द्र नरायण दूबे रहे।

सिकंदर के बाद यूनान तक पहुंची भारतीय संस्कृति

डीडीयू में प्राचीन इतिहास के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. राजवंत राव ने कहा कि भारत ने यूरोप का सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व करने वाले यूनान पर अमिट छाप छोड़ी। सिकंदर के साथ आने वाले यूनानी लेखक, विद्वान एवं इतिहासकार भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण तत्वों को अपने साथ यूनान ले गए।

जहां भारतीय संस्कृति का प्रसार, वहां हुआ सद्भावना का विकास : भारतीय संस्कृति का प्रसार जहां भी हुआ, वहां सद्भावना का फैलाव हुआ। 500 वर्षों के वाह्य आक्रमणों को झेलते हुए भारतीय संस्कृति आज भी अपने मूल स्वरूप में विद्यमान है। यह बातें डीडीयू में इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी ने कही। परिचर्चा की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में जेहाद और क्रूसेज का कोई स्थान नहीं है। इस संस्कृति में सेकुलेरिज्म और टॉलरेंस का भी कोई स्थान नहीं है। आज भी संपूर्ण विश्व में बाहर रहने वालों में सबसे अधिक भारतीय हैं, जो संस्कृति के प्रसार के संवाहक हैं।

Scanned with OKEN Scanner